



Deeni Mahol Se Rokne Ka Nuqsan (Hindi)

हफ्तावार रिमासल : 324

Weekly Booklet : 324

अमीरे अहले सुन्नत واعتد برأئناهم العائیه की किताब
“नेकी की दा'वत” की एक किस्त बनाम

दीनी माहोल से रोकने का नुक़सान

सफ़ाहत 28

क्या बेटा भी कभी चाप को मारता है ? 08

मीत के बा'द की होशरुबा मन्ज़ूर कशी 12

मरने से पहले शामत 19

शौखे तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हुज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलास

मुहम्मद इल्यास अत्तार क़ादिरि रज़वी واعتد برأئناهم العائیه

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى خَاتَمِ النَّبِيِّينَ ط
 أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ ط بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

येह मज़्मून “नेकी की दा’वत” के सफ़ह 544 ता 565 से लिया गया है।

दीनी माहोल से रोकने का नुक्सान

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 26 सफ़हात का रिसाला :
 “दीनी माहोल से रोकने का नुक्सान” पढ़ या सुन ले उसे हमेशा दीनी
 माहोल से वाबस्ता रख और मां बाप समेत उस की बे हिसाब बख़्शिश
 फ़रमा।

أَمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّينَ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : तुम अपनी मजलिसों को
 मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ कर आरास्ता करो क्यूं कि तुम्हारा मुझ पर दुरूदे पाक
 पढ़ना बरोजे क़ियामत तुम्हारे लिये नूर होगा। (جامع صغير، ص 280، حديث: 4580)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मरने से क़ब्ल नौ जवान की दाढ़ी घर वालों ने काट डाली !

घ्यारे घ्यारे इस्लामी भाइयों ! सद करोड़ अप्सोस ! हालात दिन
 ब दिन बिगड़ते चले जा रहे हैं, एक तरफ़ मगरिबी तहज़ीब की यलगार,
 फ़ैशन की तूमार, फ़िल्म बीनी के लिये घर घर टीवी, इन्टरनेट और वी सी
 आर है तो बद क़िस्मती से दूसरी तरफ़ मुसल्मान कहलाने वाले अमलन
 सुन्नतों से बेज़ार नज़र आ रहे हैं ! दा’वते इस्लामी से वाबस्ता एक नौ
 जवान अशिके रसूल जिस की उम्र ब मुशकल 20 साल होगी, दाढ़ी जब
 से आई रख ली थी, बेचारा खून के सरतान (या’नी ब्लड कैंसर। BLOOD

CANCER) में मुब्तला हो गया। मैं (या'नी सगे मदीना عَنْهُ) उस की इयादत के लिये अस्पताल पहुंचा, बेचारा जिन्दगी और मौत की कश्मकश में था.....जबान साथ नहीं दे रही थी.....दाढ़ी चेहरे से उतार ली गई थी, मैं चौंका.....उस मज़्लूम ने चेहरे की तरफ़ ब मुशिकल तमाम हाथ उठाया और इशारे से फ़रियाद की.....मैं इतना समझ सका गोया वोह कह रहा था “**मैं ने مَعَادَ اللَّهِ नहीं मुंडवाई**” मेरे घर वालों ने नींद या बेहोशी की हालत में मेरी दाढ़ी साफ़ कर डाली है। आह ! चन्द ही दिनों के बा'द वोह दुखियारा दुन्या से चल बसा। **अल्लाह** पाक मर्हूम की बे हिसाब मग़िफ़रत फ़रमाए और उस की दाढ़ी साफ़ कर डालने वाले को तौबा की सआदत बख़्शो।

امین بجاہ خاتم التبیین صلی اللہ علیہ والہ وسلم

रूह में सोज़ नहीं, क़ल्ब में एहसास नहीं कुछ भी पैग़ामे मुहम्मद का तुम्हें पास नहीं

मुस्लमान कहलाने वालों की सुन्नतों से दूरी

अफ़सोस सद करोड़ अफ़सोस ! कैसा नाजुक दौर आ पहुंचा है कि आज मुस्लमान कहलाने वाले अपनी औलाद को बिलजब्र **सुन्नतों** से दूर रखते हैं बल्कि **सुन्नतों** पर अमल करने पर बसा अवकात तरह तरह की सजाएं देते हैं, ऐसे ऐसे **दिल ख़राश वाकिआत** देखे गए कि बस खुदा की पनाह। कई नौ जवान इस्लामी भाइयों ने दीनी माहोल से **मुतअस्सिर** हो कर दाढ़ी रख ली तो ख़ानदान भर में गोया **ज़लज़ला** आ गया ! अगर धोंस धमकी और मारपीट से बाज़ न आए तो दाढ़ी रखने के सबब बेचारे घरों से निकाल दिये गए, नींद की हालत में अशिक़ाने रसूल की दाढ़ियों पर कैंचियां चला दी गईं। दा'वते इस्लामी के दीनी काम के आगाज़ से पहले का वाकिआ है, एक नौ जवान सगे मदीना عَنْهُ के पास आने जाने, उठने

बैठने लगा, उस पर माहोल का असर पड़ने लगा। उस ने घर पर आते जाते “السَّلَامُ عَلَيْكُمْ” कहना शुरू कर दिया, बा’ज अवकात दौराने गुफ्तगू उस ने “إِنْ شَاءَ اللَّهُ” कह दिया ! मुसलमान कहलाने वाले वालिदैन के कान खड़े हो गए ! बाजपुरस शुरू हो गई, चुनान्चे उस से घर में सुवाल हुवा : बेटा ! बात क्या है कि आज कल सलाम करने और اللهُ कहने लग गया है ! उस गरीब ने सुन्नतों के अदना खादिम सगे मदीना غَفِي عَنهُ का नाम ले दिया, बस खेल खत्म, उसे सख्ती के साथ रोक दिया गया कि ख़बरदार ! आज के बा’द इस “मुल्ला” की सोहबत में तुझे नहीं रहना ! आखिरे कार वोह बेचारा मॉडर्न बन गया ।

वोह दौर आया कि दीवानए नबी के लिये हर एक हाथ में पथर दिखाई देता है

दीनी माहोल से रोका तो हेरोइन्ची बन गया, बाप पछता रहा है

इसी से मिलता जुलता एक और इब्रत अंगेज वाकिआ सुनिये, चुनान्चे एक नौ जवान ग़ालिबन 1988 ई. में दा’वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हुवा । नमाजों की पाबन्दी के साथ साथ चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ सजा ली, सर पर इमामा शरीफ़ अपनी बहारें दिखाने लगा । उस ने मद्रसतुल मदीना (बालिग़ान) में पढ़ना भी शुरू कर दिया । उस का तअल्लुक एक मॉडर्न और अमीर घराने से था, घर वालों को उस की ज़िन्दगी में आने वाला मदनी इन्क़िलाब समझ में न आया चुनान्चे उस की मुख़ालफ़त शुरू हो गई, तरह तरह से उस की दिल आज़ारियां की जातीं, सुन्नतों पर चलने की राह में रुकावटें खड़ी की जातीं और दा’वते इस्लामी का दीनी माहोल छोड़ने पर मजबूर किया जाता । वोह कभी कभार बे बस

हो कर फ़रियाद करता कि मुझे इस दीनी माहोल से दूर न करो वरना पछताओगे, मगर उस की किसी ने न सुनी। मुख़ालफ़त का येह सिल्लिसला तक़रीबन तीन साल तक चलता रहा बिल आख़िर तंग आ कर उस ने घर वालों के सामने हथियार डाल दिये और दाढ़ी शरीफ़ मुंडवा कर दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल को "ख़ैर आबाद" कह दिया। बड़े भाई चूँकि डॉक्टर थे इस लिये इसे भी डॉक्टर बनने कि लिये एक मेडीकल कॉलेज में दाख़िल करवा दिया गया। जहाँ वोह हॉस्टेल (इक़ामत गाह) में बुरी सोहबत की नुहूसतों का शिकार हो कर चरस पीने लगा और सख़्त बीमार हो गया, घर वाले उसे वापस ले आए।

वालिद साहिब ने इलाज पर लाखों रुपै खर्च कर डाले मगर न सिह्हत याब हुवा न ही सुधरा बल्कि अब वोह हेरोइन का नशा करने लगा। कसरत से नशा करने की वज्ह से वोह सूख कर कांटा हो गया, दांतों की सफ़ेदी गाइब हो कर उन पर कालक की तह चढ़ गई और अब ता दमे तहरीर उस की हालत पागलों की सी हो चुकी है। **अल्लाह** की रहमत से अब वालिद साहिब दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो चुके हैं, और बेचारे बहुत पछता रहे हैं कि काश! उस वक़्त मुझे दा'वते इस्लामी की **अहम्मिय्यत** समझ में आ जाती और मैं अपने बेटे को दा'वते इस्लामी के **दीनी माहोल** से दूर न करता तो शायद आज मुझे येह दिन न देखने पड़ते। मगर "अब पछताए क्या होत जब चिड़ियां चुग गईं खेत।" **अल्लाह** तआला उस नौ जवान को नशे की आदते बद छोड़ कर फिर से **दा'वते इस्लामी** के मदनी माहोल से वाबस्ता होने की तौफीक़ अता फ़रमाए।

امين بجاه خاتم التبيين صلى الله عليه وسلم



औलाद की दुरुस्त तरबियत कीजिये वरना पछताएंगे

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस सच्चे वाक़िअे में उन वालिदैँन के लिये इब्रत ही इब्रत है जो अपनी औलाद को सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत, मदनी काफ़िले में सफ़र की सअ़ादत, आशिक़ाने रसूल की सोहबत नीज़ दाढ़ी और इमामा शरीफ़ सजाने, सुन्नतों भरा लिबास अपनाने से रोकते और सुन्नतों पर अमल करने पर बार बार टोकते बल्कि दीनी माहोल से दूर होने पर मजबूर करते हैं, याद रखिये ! आप का प्यारा बेटा, आप के जिगर का टुकड़ा और अपनी अम्मी की आंखों का तारा ही सही लेकिन येह मत भूलिये कि वोह **अल्लाह** पाक का बन्दा, उस के प्यारे हबीब **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** का उम्मतती और इस्लामी मुआशरे का एक फ़र्द है । अगर आप की तरबियत उसे **अल्लाह** पाक की दुरुस्त तरीके पर इबादत, **सरकारे मदीना** **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नतें और इस्लामी मुआशरे में उस की जिम्मेदारी न सिखा सकी तो उसे अपना इताअत गुज़ार फ़रज़न्द देखने के सुनहरे ख़्वाब भी मत देखिये क्यूं कि येह इस्लाम ही तो है जो एक मुसल्मान को अपने वालिदैँन की इताअत और उन के हुकूक की बजा आवरी का दर्स देता है । देखा येह गया है कि जब औलाद की तरबियत से ग़फ़लत के असरात सामने आते हैं तो येही वालिदैँन हर कस व नाकस के सामने अपनी औलाद के बिगड़ने का रोना रोते दिखाई देते हैं, उन्हें येह नहीं भूलना चाहिये कि औलाद को इस हाल तक पहुंचाने में खुद उन का अपना ही हाथ है । उन्होंने ने अपने बच्चे को ABC बोलना तो सिखाया मगर कुरआन पढ़ना न सिखाया, मगरिबी तहज़ीब के तौर तरीके तो समझाए मगर रसूले अरबी **صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की सुन्नतें न सिखाई, जनरल नौलेज (मा'लूमाते आम्मा) की **अहम्मियत**





पर तो उस के सामने घन्टों लेक्चर दिये मगर फ़र्ज़ दीनी उलूम के हुसूल की रग़बत न दिलाई, उस के दिल में माल की महबूबत तो डाली मगर इश्क़े रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शम्अ न जलाई, उसे दुन्यवी ना कामियों का ख़ौफ़ तो दिलाया मगर क़ब्र व हृशर के इम्तिहान की नाकामी के भयानक नताइज से न डराया, उसे “हेलो ! हाउ आर यू !” कहना तो सिखाया मगर सलाम करने का सहीह तरीक़ा न बताया ।

इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! याद रखिये ! इरतिकाबे गुनाह की मादर पिदर आज़ादी, केबल और इन्टरनेट की दस्तयाबी, रक्सो सुरूद की महफ़िलों की आबादी और बिगड़ा हुवा घरेलू माहोल, येह सब कुछ मिल कर किरदार की अज़मतों को बे इन्तिहा दाग़दार कर देते हैं और फिर ऐसे इन्सान से पाकीज़ा अफ़अल का सुदूर मुहल न सही मगर निहायत दुश्वार ज़रूर हो जाता है । इस लिये वालिदैन को चाहिये कि अपनी औलाद की जाहिरी ज़ेबो ज़ीनत, अच्छी गिज़ा, उम्दा लिबास और दीगर ज़रूरिय्यात की कफ़ालत (या'नी जिम्मेदारी निभाने) के साथ साथ उन की दीनी तरबियत के लिये भी कोशां रहें, और सिर्फ़ औलाद ही की नहीं अपनी इस्लाह की भी फ़िक्र करनी चाहिये क्यूं कि जो खुद डूब रहा हो वोह दूसरों को क्या बचाएगा ! जो खुद ख़्वाबे ग़फ़लत में हो वोह दूसरों को क्या जगाएगा, जो खुद पस्तियों की तरफ़ लुढ़क रहा हो वोह किसी और को बुलन्दियों पर क्यूंकर पहुंचाएगा ! लिहाज़ा खुद भी नेकियां अपनाना, रिज़ाए इलाही पाना, अपने आप को गुनाहों से महफूज़ बनाना, जहन्नम के हौलनाक अज़ाबों से बचाना और रहमते इलाही से जन्नतुल फ़िरदौस में जाना है और अपनी





प्यारी प्यारी औलाद को भी इसी डगर (या'नी राह) पर चलाना है। इस मक्सद के हुसूल के लिये दा'वते इस्लामी का दीनी माहोल एक ज़बरदस्त ने'मत है। कुरआनो अहादीस और अक्वाले बुजुर्गानि दीन رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِمْ की रौशनी में औलाद की तरबियत का तरीका जानने कि लिये दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 188 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, "तरबियते औलाद" का जरूर मुतालाआ कीजिये।

सूना जंगल रात अंधेरी, छाई बदली काली है

सोने वालो जागते रहियो चोरों की रखवाली है

(हदाइके बख़्शिश स.185)

शर्हें कलामे रज़ा : मेरे आका आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ عَلَيْهِ के इस शे'र के मा'ना येह हो सकते हैं कि ऐ मुसल्मानो ! इस दुन्या का जंगल सुन्सान व वीरान है, रात भी घुप अंधेरी और ऊपर से काली घटा भी छाई हुई है, ऐसी ख़ौफ़नाक सूरते हाल में अक्वल तो नींद आ नहीं सकती और अगर फिर भी सो चुके हो तो फ़ौरन जाग उठो क्यूं कि यहां के हिफ़ाज़त करने वाले तुम्हारी हिफ़ाज़त ख़ाक करेंगे येह तो खुद ही लुटेरे हैं। या'नी ग़फ़लतों और नफ़्सानी ख़्वाहिशों का हर तरफ़ घटा टोप अंधेरा छाया हुवा है, येह नफ़सो शैतान जो हर वक़्त तुहारे साथ लगे हुए हैं इन को अपना ख़ैर ख़्वाह मत समझ बैठना येह मुहाफ़िज़ नहीं बल्कि चोर हैं ख़बरदार ! होशियार !! जागते रहो !!! कहीं येह तुम्हारा ईमान न चुरा लें।

चन्द रोज़ा है येह दुन्या की बहार दिल लगा इस से न ग़ाफ़िल ज़ी नहार

उम्र अपनी यूं न ग़फ़लत में गुज़ार होशियार ऐ महुवे ग़फ़लत होशियार

एक दिन मरना है आख़िर मौत है कर ले जो करना है आख़िर मौत है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ





क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ?

तम्बीहुल ग़ाफ़िलीन में है कि “समरक़न्द” के एक आलिमे दीन हज़रते अबू हफ़्स رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ के पास एक शख़्स आया और कहने लगा : “मेरे बेटे ने मुझे मारा है।” उन्होंने ने हैरत से पूछा : क्या बेटा भी कभी बाप को मारता है ? उस ने कहा : जी हां ! ऐसा ही हुवा है। हज़रते अबू हफ़्स رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने दरयाफ़्त किया : क्या आप ने इसे दीनी इल्मो अदब सिखाया है ? उस शख़्स ने नफ़ी (या’नी इन्कार) में जवाब दिया। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने पूछा : कुरआने करीम सिखाया है ? उस ने कहा : नहीं। फिर पूछा : तो वोह क्या करता है ? उस ने बताया खेतीबाड़ी करता है। हज़रते अबू हफ़्स रَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने फ़रमाया : जानते हैं कि उस ने आप को क्यूं मारा है ? कहा : नहीं। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ ने इस्लाह की ख़ातिर उस पर चोट करते हुए फ़रमाया : शायद वोह सुब्द के वक़्त गधे पर सुवार हो कर जब खेत की तरफ़ जा रहा होगा, बैल उस के आगे और कुत्ता उस के पीछे होगा, कुरआने पाक तो उसे पढ़ना आता नहीं कि कुछ रूहानिय्यत नसीब होती बस यूं ही ग़फ़्लत में कुछ गुनगुना रहा होगा, ऐसे में आप उस के सामने आ गए होंगे, उस ने समझा होगा कि बैल आड़े आ गया है और उस को हांकने के लिये सर पर कोई चीज़ दे मारी होगी ! शुक्र कीजिये कि आप का सर फटा नहीं।

(تسمیة الغافلین، ص 68)

महशर में पिटाई से बाप का गोशत पोस्त झड़ जाएगा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! अपनी औलाद को इस्लामी तरबियत न देने वाले का अन्जाम ! आज भी बे शुमार बाप ऐसे मिलेंगे जिन्हें येह शिकायत होगी कि हमारी औलाद हमें गालियां सुनाती,



हम पर शोर मचाती, हमारी पिटाई लगाती और घर से निकाल देने की धमकियां सुनाती है। बस मां बाप की दुनिया व आखिरत की भलाई इसी में है कि ऐन शरीअत व सुन्नत के मुताबिक औलाद की तरबियत करें। वरना दुनिया अगर संवर भी गई तो आखिरत में आफ़ियत का हुसूल दुश्वार हो जाएगा। औलाद की दुरुस्त तरबियत न करने वाले एक बाप के तअल्लुक से एक लरज़ा खेज़ रिवायत समाअत फ़रमाइये चुनान्चे फ़कीह अबुल्लैस समरकन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِ नक़ल करते हैं : मरवी है कि मर्द से तअल्लुक रखने वालों में पहले उस की जौजा और उस की औलाद है, येह सब (या'नी बीवी, बच्चे क्रियामत में) **अल्लाह** पाक की बारगाह में अर्ज़ करेंगे : ऐ हमारे रब ! हमें इस शख़्स से हमारा हक़ दिला, क्यूं कि इस ने कभी हमें **दीनी उमूर की ता'लीम** नहीं दी और येह हमें **हराम** खिलाता था जिस का हमें इल्म न था, फिर उस शख़्स को हराम कमाने पर इस क़दर मारा जाएगा कि उस का गोशत झड़ जाएगा फिर उस को मीज़ान (या'नी तराज़ू) के पास लाया जाएगा, फिरिश्ते पहाड़ के बराबर उस की नेकियां लाएंगे तो उस के इयाल (या'नी बाल बच्चों) में से एक शख़्स आगे बढ़ कर कहेगा : **“मेरी नेकियां कम हैं।”** तो वोह उस की नेकियों में से ले लेगा, फिर दूसरा आ कर कहेगा : **“तू ने मुझे सूद खिलाया था।”** और उस की नेकियों में से ले लेगा, इस तरह उस के घर वाले उस की सब नेकियां ले जाएंगे और वोह अपने अहलो इयाल की तरफ़ हसरत व यास (या'नी रन्ज व मायूसी) से देख कर कहेगा : **“अब मेरी गरदन पर वोह गुनाह व मज़ालिम रह गए जो मैं ने तुम्हारे लिये किये थे।”** (उस वक़्त) फिरिश्ते कहेंगे : **“येह वोह (बद नसीब) शख़्स है जिस की नेकियां इस के घर वाले ले गए और येह उन (या'नी घर वालों) की वजह से जहन्नम में चला गया।”**

(قرة العيون، ص 401)



जो घर वालों की वजह से दीनी माहोल से दूर हो गए

न जाने कितने इस्लामी भाई ऐसे होंगे जिन्होंने ने दा'वते इस्लामी से मुतअस्सिर हो कर दाढ़ी शरीफ सजाई होगी, दीगर फ़राइज़ व वाजिबात और सुन्नतों पर अमल की तरकीब बनाई होगी मगर घर वालों या किसी और की तरफ़ से की जाने वाली मुख़ालफ़त के सबब दिल बरदाश्ता हो कर दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहोल से दूर जा पड़े होंगे। ऐसों की ख़िदमतों में सगे मदीना عَفَى की दस्त बस्ता इल्लिजा है कि दा'वते इस्लामी आप की अपनी सुन्नतों भरी तहरीक है, बराए करम ! इस से पहले पहले पलट आइये कि मौत आप को दुन्या की रौनकों से उठा कर क़ब्र की तन्हाइयों में मुन्तक़िल कर दे और आप पर येह हसरत त़ारी हो जाए कि काश ! दुन्या में ज़ियादा से ज़ियादा नेकियां कमा लेता। उठिये ! हिम्मत कीजिये ! गुनाहों से हिफ़ाज़त और नेकियों पर इस्तिक़ामत पाने के लिये दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहोल से एक बार फिर वाबस्ता हो जाइये। हो सकता है अब मुख़ालफ़त न हो, या हो भी तो पहले से कम हो क्यूं कि वक़्त के साथ साथ हालात व ख़यालात बदल जाते हैं, मगर याद रहे कि मुख़ालफ़त की सूरत में भी आप को नरमी नरमी और सिर्फ़ नरमी से काम लेना है और गुफ़्तार व किरदार और अ़दात व अ़त्वार में ऐसा मदनी इन्क़लाब लाना है कि घर वाले ज़बाने हाल से पुकार उठें : “वाह क्या बात है दा'वते इस्लामी की !” आप की तरगीब व तहरीस के लिये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं, चुनान्चे

गिर गिर कर संभल गया

एक इस्लामी भाई ने जब दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से मुतअस्सिर हो कर दाढ़ी रखना शुरू की तो घर में दीनी माहोल न होने





की वजह से ऐसी मुख़ालफ़त हुई कि **مَعَادِلِ اللَّهِ** कटवाते ही बनी मगर इन्हों ने दा'वते इस्लामी से अपना नाता नहीं तोड़ा । सुन्नतों भरे हफ़्तावार इज्तिमाअ में गाहे गाहे हाज़िरी देता रहा, इस से गोया मेरी “बैटरी चार्ज” होती रही और नमाज़ों की पाबन्दी जारी रही । कुछ अ़र्सा गुज़रने के बा'द फिर जज़्बे ने उठान ली, ज़ेहन बना और उन्हों ने दोबारा **दाढ़ी** बढ़ानी शुरूअ की, फिर मुख़ालफ़त शुरूअ हो गई, इस मर्तबा पहले के मुक़ाबले में जियादा अ़र्सा मुख़ालफ़त झेली मगर फिर हिम्मत हार गए और **اَسْتَغْفِرُ اللَّه** उन्हों ने दाढ़ी कटवा दी । बिल आख़िर हिम्मत कर के तीसरी बार उन्हों ने **दाढ़ी** का आगाज़ कर दिया, अब की बार घर वालों की तरफ़ से सिर्फ़ बराए नाम मुख़ालफ़त की गई और **الْحُدُودِ لِلَّهِ** वोह दाढ़ी बढ़ाने में काम्याब हो गए । यहां तक कि सर पर इमामा शरीफ़ का ताज भी सजा लिया और दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल में रच बस गए और दीनी काम भी शुरूअ कर दिया । आज (ता दमे तहरीर) तक्रीबन 14 साल होने को आए हैं, दाढ़ी शरीफ़ ब दस्तूर उन के चेहरे पर और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज मौजूद है, **अल्लाह** पाक येह सुन्नतें **क़ब्र** में भी साथ ले जाने की सअ़ादत इनायत फ़रमाए । आमीन । (उन का कहना है कि) आज वोह सोचते हैं कि अगर दाढ़ी मुंडाने की हालत में मौत आ जाती तो क्या बनता ! **अल्लाह** पाक दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे दीनी माहोल को दिन ग्यारहवीं रात बारहवीं तरक्की अ़ता फ़रमाए, जिस ने तबाही की तंग गली से निकाल कर जन्नत की शाहराह पर गामज़न कर दिया और ज़ाहिरो बातिन पर ऐसा मदनी रंग चढ़ाया कि अब घर वाले बल्कि दीगर रिश्तेदार भी **दा'वते इस्लामी** की बरकतों के काइल हो चुके हैं ।





अगर सुन्नतें सीखने का है ज़ब्बा तुम आ जाओ देगा सिखा दीनी माहोल
 तू दाढ़ी बढ़ा ले इमामा सजा ले नहीं है यह हरगिज़ बुरा दीनी माहोल
 संवर जाएगी आखिरत إِنَّ شَاءَ اللَّهُ तुम अपनाए रखो सदा दीनी माहोल

(वसाइले बख़्शाश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

मौत के बा 'द की होशरुबा मन्ज़र कशी

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! और ऐ अशिक़ाने रसूल ! यह अहद कीजिये : ख़्वाह कितनी ही सख़्त्रियां सहनी पड़ें मक्की मदनी आका अहद कीजिये : ख़्वाह कितनी ही सख़्त्रियां सहनी पड़ें मक्की मदनी आका صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी प्यारी सुन्नत दाढ़ी मुबारक चेहरे पर मुस्तक़िल सजानी और क़ब्र में भी साथ ले जानी है। याद रहे ! दाढ़ी मुंडवाना और एक मुठ्ठी से घटाना दोनों ह़राम है। दा'वते इस्लामी के मक़तबतुल मदीना के रिसाले, "काले बिच्छू" सफ़हा 4 से शुरूअ होने वाला दिल हिला देने वाला मज़मून बित्तसर्फ़ पेश किया जाता है बगोशे होश सुनिये : ऐ ग़ाफ़िल इस्लामी भाई ! ज़रा होश कर !! मरने के बा'द तेरी एक न चलेगी, तेरे नाज़ उठाने वाले तेरे कपड़े भी उतार लेंगे। तू कितना ही बड़ा सरमाया दार सही, तुझे वोही कोरे लठ्ठे का कफ़न पहनाएंगे जो फ़ुटपाथ पर दम तोड़ने वाले ला वारिस को पहनाया जाता है। तेरी कार है तो वोह भी ग़ैरेज (GARAGE) में खड़ी रह जाएगी। तेरे बेश क़ीमत लिबास सन्दूक में धरे रह जाएंगे। तेरा माल व मताअ और ख़ून पसीने की कमाई पर वुरसा क़ाबिज़ हो जाएंगे। "अपने" अशक़ बहा रहे होंगे, "बेगाने" (या'नी पराए) खुशियां मना रहे होंगे। तेरे नाज़ उठाने वाले तुझे अपने कन्धों पर लाद कर चल देंगे और एक ऐसे वीराने में ले जाएंगे कि तू कभी इस हौलनाक सन्नाटे में खुसूसन रात





के वक़्त एक घड़ी के लिये भी तन्हा न आया था न आ सकता था बल्कि इस के तसव्वुर से ही कांप जाया करता था। अब गढ़ा खोद कर तुझे मनो मिट्टी तले दफ़न कर के तेरे सारे अज़ीज़ चल देंगे, तेरे पास एक रात कुजा एक घन्टा भी ठहरने के लिये कोई राज़ी न होगा। ख़्वाह तेरा चहीता बेटा ही क्यूं न हो, वोह भी भाग खड़ा होगा। तू हसरत भरी निगाहों से अज़ीज़ों और दोस्तों को निगाहों से ओझल होता देख रहा होगा, दिल डूबता जा रहा होगा। इतने में दो ख़ौफ़नाक शक़लों वाले फ़िरिशते (मुन्कर व नकीर) अपने लम्बे लम्बे दांतों से क़ब्र की दीवारें चीरते हुए तेरे सामने आ मौजूद होंगे, उन की आंखों से आग के शो'ले निकल रहे होंगे, काले काले मुहीब (या'नी हैबत नाक) बाल सर से पांव तक लटक रहे होंगे, तुझे झिड़क कर बिठाएंगे, करख़्त (या'नी निहायत ही सख़्त) लहजे में इस तरह सुवालात करेंगे : “مَنْ رَبُّكَ؟” (या'नी तेरा रब कौन है ?) “مَا دِينُكَ؟” (या'नी तेरा दीन क्या है ?) इतने में तेरे और मदीने के दरमियान हाइल शुदा तमाम पर्दे उठा दिये जाएंगे किसी की हसीन व दिलरुबा और प्यारी प्यारी सूरत सामने आ जाएगी, या वोह अज़ीम और प्यारी हस्ती खुद तशरीफ़ ले आएगी। क्या अज़ब ! तेरी आंखें शर्म से झुक जाएं ! हो सकता है कि तू सोच में पड़ जाए कि निगाहें उठाऊं तो कैसे उठाऊं ! अपनी बिगड़ी हुई सूरत दिखाऊं तो कैसे दिखाऊं ! येह वोही तो मदनी आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ हैं जिन का मैं कलिमा पढ़ा करता था, अपने आप को इन صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का गुलाम भी कहता था, लेकिन मैं ने महब्बते रसूल की निशानी अपनी दाढ़ी शरीफ़ के साथ येह क्या किया ! प्यारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने तो येह फ़रमाया : “मूँछें ख़ूब पस्त करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो और यहूदियों जैसी सूरत मत बनाओ ।”





(28/4) شرح معانی الآثار للطحاوی، (شرح معانی الآثار للطحاوی، 28/4) लेकिन हाए मेरी बद बख़्ती ! मैं चन्द रोज़ा दुन्या की जीनत में खो गया, फ़ैशन ने मेरा सत्तियानास कर दिया, आह ! आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के सख़्ती से मन्अ करने के बा वुजूद मैं ने दाढ़ी मुंडवा कर अपना चेहरा यहूदियों या'नी मदनी आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दुश्मनों जैसा बनाए रखा ! हाए ! अब क्या होगा ! कहीं ऐसा न हो कि मेरी बिगड़ी हुई शक्ल देख कर सरकारे आली वकार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ मुंह फेर लें और येह फ़रमा दें कि “येह तो मेरे दुश्मनों वाला चेहरा है मेरे गुलामों वाला नहीं !!” अगर खुदा ना ख़्वास्ता ऐसा हुवा तो सोच उस वक़्त तुझ पर क्या गुज़रेगी !

न उठ सकेगा कियामत तलक खुदा की कसम अगर नबी ने नज़र से गिरा के छोड़ दिया

ऐसा नहीं होगा, إِنَّ شَاءَ اللهُ हरगिज़ नहीं होगा। अभी तू जिन्दा है, मान जा ! अपने कमज़ोर बदन पर तरस खा ! झटपट उठ हिम्मत कर ! अंग्रेज़ी फ़ैशन और फ़िरंगी तहज़ीब को तीन त़लाकें दे डाल और अपना चेहरा प्यारे प्यारे आका, मक्की मदनी मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पाकीज़ा सुन्नत से आरास्ता कर ले और एक मुठ्ठी दाढ़ी सजा ले। हरगिज़ हरगिज़ शैतान के इस फ़रेब में न आ और इन वसाविस की त़रफ़ तवज्जोह मत ला, कि “अभी तो मैं इस क़ाबिल नहीं हुवा, मेरी तो उम्र ही क्या है ? मेरा इल्म भी इतना कहां है ! अगर किसी ने दीन के बारे में सुवाल कर दिया तो मुझे जवाब नहीं आएगा मैं तो जब क़ाबिल हो जाऊंगा उस वक़्त दाढ़ी रखूंगा।” याद रख ! येह शैतान का काम्याब तरीन वार है कि इन्सान अपने बारे में येह समझ बैठे कि “हां ! अब मैं क़ाबिल हो गया हूं।” याद रखिये ! अपने आप को “क़ाबिल” समझना येही “ना क़ाबिलिय्यत” की सब से बड़ी दलील है। अज़िज़ी इख़्तियार कर ! बड़े बड़े उलमाए किराम भी हर सुवाल का





जवाब नहीं देते तो क्या हर सुवाल का जवाब देने की तू ने कोई जिम्मेदारी ले रखी है ? नफ़्स की हीला बाज़ियों में मत आ ! और मान जा, ख़्वाह मां रोके, बाप मन्अ करे, मुअशरा आड़े आए, शादी में रुकावट खड़ी हो। कुछ ही हो जाए **अल्लाह** पाक और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का हुक्म मानना मानना और मानना ही है, तसल्ली रख ! आगर जोड़ा लौहे महफूज़ पर लिखा हुवा है तो तेरी शादी हो कर रहेगी और अगर नहीं लिखा तो दुन्या की कोई ताक़त तेरी शादी नहीं करवा सकती। जिन्दगी का क्या भरोसा ?

दाढ़ी मुंडवाते ही मौत

किसी ने सगे मदीना عَنْهُ (राकिमुल हुरूफ़) को कुछ इस तरह का वाकिआ सुनाया था कि बंगलादेश में एक नौ जवान ने दाढ़ी रखी थी, जब उस की शादी का वक़्त करीब आया तो वालिदैन ने दाढ़ी मुंडवाने पर मजबूर किया। बा दिले ना ख़्वास्ता (या'नी न चाहते हुए भी) नाई के पास जा कर दाढ़ी मुंडवा कर घर की तरफ़ आते हुए सड़क उबूर कर रहा था कि किसी तेज रफ़्तार गाड़ी ने कुचल कर रख दिया, उस का दम निकल गया और उस की शादी के अरमान ख़ाक में मिल गए, मां बाप न बचा सके ! न शादी हुई न दाढ़ी रही। तो प्यारे इस्लामी भाई ! होश में आ ! **अल्लाह** पाक पर भरोसा कर के आज ही दाढ़ी मुंडवाने से तौबा कर के अहद कर ले कि ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की महब्वत में गरदन तो कट सकती है मगर अब मेरी दाढ़ी दुन्या की कोई ताक़त मुझ से जुदा नहीं कर सकती। शाबाश.....! मुबारक.....! मुबारक.....! मुबारक.....!!!

उन का दीवाना इमामा और जुल्फ़ो रीश में वाह ! देखो तो सही लगता है कितना शानदार

(वसाइले बख़्शाश, स. 399)





दाढ़ी मुन्डों से आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की नफ़रत का इब्रतनाक वाक़िआ

सगे ईरान खुस्रौ (परवेज़) के पास हज़रते अब्दुल्लाह बिन हुज़ाफ़ा رَضِيَ اللهُ عَنْهُ के हाथ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का नेकी की दा'वत पर मुश्तमिल नामए मुबारका (या'नी मक्तूब शरीफ़) पहुंचा तो इस गुस्ताख़े रसूल ने मक्तूबे वाला को देखते ही गुस्से से शहीद कर डाला और उस बद ज़बान ने बका : (.....परवेज़ का बे अदबाना जुम्ला नक्ल करने की हिम्मत नहीं, लिहाज़ा हज़फ़ किया जाता है.....) इस के बा'द सगे ईरान खुस्रौ (परवेज़) ने बाज़ान को जो यमन में उस का गवर्नर था और अरब का तमाम मुल्क उस के ज़ेरे इक्तदार समझा जाता था यह हुक्म भेजा कि..... (यहां पर भी सगे ईरान परवेज़ की बक्वास हज़फ़ की जाती है) बाज़ान ने एक फ़ौजी दस्ता मामूर किया, जिस के अफ़सर का नाम ख़र ख़स्सरह था। नीज़ सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के असरो रुसूख़ पर गहरी नज़र डालने के लिये एक मुल्की अफ़सर भी उस के साथ किया जिस का नाम बान्विया था। यह दोनों अफ़सरान जिस वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किये गए तो रो'बे नुबुव्वते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की वज्ह से उन की गरदन की रगें थरथरा रही थीं। यह लोग चूँकि आतश परस्त (पारसी) थे। इस लिये दाढ़ियां मुंडी हुईं और मूछें इस क़दर बढ़ी हुईं थीं कि उन से उन के लब ढके हुए थे और अपने बादशाह परवेज़ को “रब” कहा करते थे। उन के चेहरे देख कर प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को तकलीफ़ पहुंची, कराहत (या'नी बेज़ारी) के साथ फ़रमाया : “तुम पर हलाकत हो कि ऐसी सूरत बनाने का तुम से किस ने कहा है ?” उन्हीं ने जवाब





दिया : “हमारे रब परवेज़ ने ।” **प्यारे आका** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फ़रमाया :
 “मगर मेरे रब ने तो मुझे यह हुक्म दिया है कि दाढ़ी बढ़ाऊं और मूँछें
 कतरवाऊं ।” (35/2، تاريخ الخلفاء، फ़तावा रज़विय्या, 22/647, मुलख़ब्रसन)

क़ियामत का दिल हिला देने वाला मन्ज़र

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस वाकिए पर गौर फ़रमाइये !

समझ में न आया हो तो दोबारा पढ़िये ! ख़ूब गौर कीजिये ! दो ऐसे अश्खास जो अभी ग़ैर मुस्लिम हैं मुसल्मान नहीं हुए । अहकामे शरीअत से ना वाक़िफ़ भी हैं । मगर चूँकि उन्होंने ने फ़ितरती वज़अ के साथ ज़ियादती की, चेहरे के कुदरती हुस्न को बरबाद किया । सरकारे अ़ली वक़ार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की तबीअते मुबारका को उन का येह (या'नी दाढ़ी मुंडाने का) फे'ल इन्तिहाई ना गवार गुज़रा और बा वुजूद रहूमतुल्लिल अ़लामीन होने के फ़रमाया : “तुम पर हलाकत हो ।” ज़रा सोचिये ! गौर कीजिये ! जब मैदाने क़ियामत में सब जम्अ होंगे, नफ़्सी नफ़्सी का अ़लम होगा, मां अपने बेटे से और बेटा अपने बाप से भाग रहा होगा, उस वक़्त एक ही तो जाते पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ होगी जो आसियों की उम्मीद गाह होगी, उसी सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ की ख़िदमते अक्दस में सब को हाज़िरी देनी होगी । याद रखिये ! जो जिस हाल में मरेगा, उसी हाल में क़ियामत के रोज़ उठाया जाएगा । दाढ़ी वाला, दाढ़ी के साथ उठेगा और दाढ़ी मुन्डा, दाढ़ी मुन्डा ही उठेगा ।

ऐ महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की सुन्नत को अपने चेहरे से दूर करने वालो ! अगर प्यारे सरकार, शहन्शाहे अबरार صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने आप से इस्तिफ़्सार फ़रमा लिया : “क्या तुम मुझ से महबूबत करते रहे हो ?” ज़ाहिर





है इन्कार तो कर ही नहीं सकते येही अर्ज करेंगे : **या रसूलल्लाह**
 صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! आप ही हमारे सब कुछ हैं, हम आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को
 अपने मां बाप, माल व औलाद सब से अजीज तर समझते हैं। सरकार
 صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम तो दुनिया में झूम झूम कर अर्ज किया करते थे :

मेरे तो आप ही सब कुछ हैं रहमते आलम ! मैं जी रहा हूँ ज़माने में आप ही के लिये

हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हमारी बेताबी का आलम तो येह था कि बे
 क़रार हो कर अर्ज गुज़ार हुवा करते थे :

गुलामे मुस्त्फ़ा बन कर मैं बिक जाऊं मदीने में मुहम्मद नाम पर सौदा सरे बाज़ार हो जाए

ऐ आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! जब **महब्बत** कुछ ज़ियादा ही जोश मारती
 थी तो येह तक कह देते थे :

जान भी मैं तो दे दूँ खुदा की क़सम ! कोई मांगे अगर मुस्त्फ़ा के लिये !

येह सब कुछ सुन कर (अल्लाह पाक न करे) आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ
 बिलफ़र्ज येह इर्शाद फ़रमाएं : ऐ मेरे गुलामो ! अगर वाकेई तुम मुझे मां बाप
 और माल व औलाद सब से अजीज तर समझते थे और सिर्फ़ मेरी ही
 खातिर दुनिया में जिन्दा थे। नीज मेरे नाम पर बिकने बल्कि जान तक देने
 के लिये तय्यार थे तो फिर आख़िर क्या वजह थी कि शक्लो सूरत मेरे
 दुश्मनों जैसी बनाए फिरते थे ? क्या तुम्हें मेरे येह इर्शादात न पहुंचे थे कि

① “मूँछें ख़ूब पस्त (या'नी छोटी) करो और दाढ़ियों को मुआफ़ी दो (या'नी
 इन को बढ़ने दो) और यहूदियों की सी सूरत मत बनाओ। ” (28/4، شرح معاني الآثار للطحاوي)

② “जो मेरी सुन्नत इख़्तियार करे वोह मेरा और जो मेरी सुन्नत से मुंह फेरे
 वोह मेरा नहीं। ” (127/38، تاريخ ابن عساکر)

③ “जो मेरी सुन्नत पर अमल न करे
 वोह मुझ से नहीं। ” (1846:406/2، حديث)





अगर आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रूठ गए तो.....!

फ़ैशन पर मर मिटने वालो ! यह इर्शादाते अलिया याद दिलाने के बा'द अगर खुदा ना ख़्वास्ता हमारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ रूठ गए तो आप क्या करेंगे ? किस के दरवाजे पर फ़रियाद करेंगे ? किस के दरवाजे पर शफ़ाअत की भीक लेने जाएंगे ? कौन **अल्लाह** पाक के क़हरो ग़ज़ब से बचाने वाला होगा ? अभी मौक़अ है, जब तक सांस बाकी है वक़्त है, झटपट तौबा कर लीजिये, अपना चेहरा प्यारे प्यारे आका صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की प्यारी प्यारी सुन्नत से आरास्ता कर लीजिये, अपने रुख़ पर महब्बत की निशानी सजा लीजिये । यह खुश फ़हमी ख़त्म कर दीजिये कि अभी तो उम्र ही क्या है ? बा'द में रख लेंगे, शादी के बा'द देखी जाएगी ! भोले भाले इस्लामी भाइयो ! शैतान के चक्कर में मत आइये ! वोह कैसे ही क़रीबी अज़ीज़ की ज़बानी तुम्हें यह बावर करवाने की कोशिश करे कि अभी तुम्हारी उम्र दाढ़ी रखने जितनी नहीं हुई है, बा'द में रख लेना । यकीन मानिये यह शैतान का बहुत बड़ा और बुरा वार है, इस वार से उस मरदूद ने न जाने कितनों को तबाह कर दिया । आइये ! आप को एक इब्रतनाक वाक़िआ सुनाऊं ।

मरने से पहले शामत

एक नौ जवान कमो बेश साल भर “दा'वते इस्लामी” के सुन्नतों भरे दीनी माहोल से वाबस्ता रहा और दाढ़ी भी सजा ली । फिर न जाने क्या सूझी ! शायद बुरे दोस्त मिल गए । **مَعَاذَ اللهِ** दाढ़ी साफ़ करवा दी । शबे जुमुआ को हफ़तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में ग़ैर हाज़िर रहा । जुमुआ के रोज़ दोस्तों के साथ साहिले समुन्दर पर पिकनिक मनाने के लिये गया । और आह ! दाढ़ी मुंडवाने के सिर्फ़ 15 दिन के बा'द बेचारा समुन्दर में डूब कर मौत के घाट उतर गया ।





मिले खाक में अहले शां कैसे कैसे मकीं हो गए ला मकां कैसे कैसे

हुए नामवर बे निशां कैसे कैसे ज़मीं खा गईं नौ जवां कैसे कैसे !

जगह जी लगाने की दुन्या नहीं है यह इब्रत की जा है तमाशा नहीं है

फैशन परस्तों की सोहबत की नुहूसत

उस मर्हूम नौ जवान की उम्र तक़रीबन बीस साल होगी, क्या उम्र थी ! बकौल कसे शायद दाढ़ी रखने की अभी उम्र ही नहीं आई थी ! कहीं इस लिये तो इन्तिक़ाल से सिर्फ़ पन्दरह दिन पहले दाढ़ी साफ़ नहीं करवा दी थी ! नहीं हरगिज़ नहीं, बस बेचारे के नसीब ! बुरी सोहबत का असर ! अल्लाह पाक ! मर्हूम की मग़िफ़रत करे । यह डूबने वाला नौ जवान हम सब को उबारने के लिये बहुत कुछ सामाने इब्रत छोड़ गया ! जो कोई दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से दूर होने का ख़याल करे या सैरो तफ़रीह के शाएकीन से दोस्ती का रिश्ता जोड़े, उसे चाहिये कि इस इब्रतनाक वाक़िए पर अच्छी तरह ग़ौर कर ले कि कहीं मैं भी दूसरों के लिये सामाने इब्रत न बन जाऊं ! कहीं ऐसा न हो कि मेरे यह फैशन परस्त दोस्त खुद भी डूबें और मुझे भी ले डूबें ! और ग़ौर करे कि कहीं ऐसा तो नहीं कि मेरी ज़िन्दगी के दिन पूरे होने को आ गए हैं और इसी वजह से शैतान अपना पूरा जोर मुझ पर लगा रहा है, कहीं चन्द रोज़ की बुरी सोहबत की नुहूसत के ज़रीए वोह मेरी ज़िन्दगी भर की कमाई पर पानी न फेर दे । बे नमाज़ियों और फ़ासिकों की सोहबतों में बैठने वालो ! ख़बरदार !!! रब्बुल अनाम पारह 7 सूरतुल अन्ज़ाम आयत नम्बर 68 में इर्शाद फ़रमाता है :

﴿وَأَمَّا يُسِيبُكَ الشَّيْطَانُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الدِّكْرِى مَعَ الْقَوْمِ الظَّالِمِينَ﴾ **तरजमाए कन्ज़ुल**

ईमान : और जो कहीं तुझे शैतान भुलावे तो याद आए पर ज़ालिमों के पास न बैठ ।





दाढ़ी सिर्फ़ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पसन्द की रखो

ऐ मदनी महबूब صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के चाहने वालो ! मान जाओ !

अपनी जवानी पर मत इतराओ ! दुन्यवी मजबूरियों को हीला मत बनाओ, आओ ! आओ ! ऐ आशिक़ाने रसूल ! आओ ! रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के दामने करम ले लिपट जाओ ! इन के परवर दगार, रब्बे ग़फ़ार से भी मग़िफ़रत की भीक तलब कर लो । इन से भी मुआफ़ी मांग लो ! येह बारगाह करम वाली बारगाह है, यहां से कोई साइल मायूस नहीं जाता, सुन्नत की ख़ैरात ले लो, अपने चेहरे से दुश्मने खुदा व मुस्तफ़ा की नुहूसत की अलामत को हमेशा हमेशा के लिये धो डालो और प्यारी प्यारी सुन्नत चेहरे पर सजा लो । और हां ! ख़याल रखना ! शैतान बड़ा मक्कार व अय्यार है, कहीं ऐसा न हो कि आप अंग्रेज़ों और यहूदियों से तो दामन छुड़ा लें और दाढ़ी भी सजा लें मगर शैतान दूसरे ज़ाविये से फिर घेर ले और आप को फ़्रान्सीसियों के क़दमों में पटख़ दे । मतलब येह कि कहीं “फ़्रेन्च कट” या’नी ख़श्ख़शी दाढ़ी न रख लेना कि दाढ़ी मुंडाना और कतरवा कर एक मुठ्ठी से छोटी कर देना दोनों ही हराम है । दाढ़ी रखिये और ज़रूर रखिये मगर प्यारे प्यारे मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की पसन्द की रखिये या’नी एक मुठ्ठी पूरी रखिये ।

दाढ़ी मुन्डे की 30 शामतें

फ़तावा रज़विय्या जिल्द 22 में दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने की मजम्मत में “لَمَعَةُ الضُّحَى فِي إِعْقَاءِ اللَّحَى” नामी एक रिसाला है और उस रिसाले के इख़िताम पर या’नी फ़तावा रज़विय्या जिल्द 22 सफ़हा 675 ता 676 पर दाढ़ी मुंडाने और एक मुठ्ठी से घटाने वालों के मुतअल्लिक़ कुरआनो हदीस की रोशनी में 30 सज़ाओं, वर्इदों और मजम्मतों की फ़ेहरिस





दर्ज फ़रमाई है : (बख़ौफ़े तवालत हवाले हज़फ़ कर दिये हैं, जिन्हें देखना हो वोह वहीं से देख लें) ❀ दाढ़ी मुंडाने वाले **अल्लाह व रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के ना फ़रमान हैं ❀ शैताने लईन के महकूम (या'नी मा तहत) हैं ❀ सख़्त अहमक़ हैं ❀ **अल्लाह** (पाक) उन से बेज़ार हैं ❀ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बेज़ार हैं ❀ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को ऐसी सूरत देखने से कराहत आती है ❀ यहूदी सूरत हैं ❀ नसरानी वज़अ हैं फ़िरंगियों से मुशाबेह (या'नी मिलते जुलते हैं) ❀ मजूस (आतश परस्तों) के पैरो (या'नी नक़शे क़दम पर) हैं ❀ हिन्दुओं की सूरत, मुशिरकीन की सीरत हैं ❀ मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के गुरौह से नहीं ❀ उन्हें (उन ही) अपने हम सूरतों नसारा व यहूद व मजूस व हुनूद के गुरौह से हैं ❀ **वाजिबुत्ता 'ज़ीर** (या'नी लाइके सज़ा) हैं शहर बदर करने के काबिल हैं ❀ **मुबद्दिलीने** फ़ितरत (या'नी फ़ितरत बदलने वाले) हैं **मुग़थियरे ख़ल्क़िल्लाह** (या'नी अल्लाह के बनाए हुए को बिगाड़ने वाले) हैं ❀ ज़नाने **मुखन्नस** (या'नी हिजड़े) हैं ❀ खुदा के अहद शिकन (वा'दा ख़िलाफ़) हैं ❀ ज़लीलो ख़्वार हैं ❀ घिनौने काबिले नफ़त हैं ❀ मरदूदुशहादह (या'नी गवाही के लिये ना लाइक़) हैं ❀ पूरे इस्लाम में दाख़िल न हुए ❀ हलाकत में हैं, मुस्तहिक़े बरबादी हैं ❀ दीन में बे बहरा (महरूम) आख़िरत में बे नसीब हैं ❀ अज़ाबे इलाही के मुन्तज़िर ❀ **अल्लाह** पाक को सख़्त दुश्मन व **मबग़ूज़** हैं ❀ सुब्ह हैं तो **अल्लाह** पाक के ग़ज़ब में, शाम हैं तो **अल्लाह** के ग़ज़ब में ❀ क़ियामत के दिन उन की सूरतें बिगाड़ी जाएंगी ❀ **अल्लाह व रसूल** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के मलऊन हैं, दुन्या व आख़िरत में मलऊन (ला'नत किये गए) हैं, **अल्लाह** व मलाएका व बशर (इन्सान) सब की उन पर ला'नत है, फ़िरिशतों ने उन के ला'नती होने पर आमीन कही ❀ **अल्लाह**





पाक उन पर नज़रे रहमत न फ़रमाएगा ❀ वोह बिहिश्त (या'नी जन्त) में न जाएंगे ❀ **अल्लाह** पाक उन्हें जहन्नम में डालेगा । **وَالْعِبَادُ بِاللّٰهِ تَعَالٰی** (या'नी और (इस से) **अल्लाह** पाक की पनाह)

मक्रे शैतां में मत आओ भाइयो ! रुख़ पे तुम दाढ़ी सजाओ भाइयो !

छोड़ो फ़ैशन मान जाओ भाइयो ! खुद को दोज़ख़ से बचाओ भाइयो !

बिल यक़ीं दुन्या बड़ी है बे वफ़ा इस से तुम मत दिल लगाओ भाइयो !

मैं निहायत ही बिगड़े हुए किरदार का मालिक था

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयों ! महबूबते रसूल की निशानी दाढ़ी बढ़ाने का ज़ब्बा पाने, सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाने का शौक बढ़ाने, ज़ब्बए इश्के रसूल से सरशार हो कर जुल्फें रखाने की सुन्नत अपनाने का जौक निभाने, सुन्नत के मुताबिक़ लिबास सजाने पर इस्तिक़ामत पाने और कुरआने करीम पढ़ने पढ़ाने के लिये दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से हर दम वाबस्ता रहिये । सुन्नतों भरे मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र का मा'मूल बनाइये और नेक आ'माल के मुताबिक़ अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ गुज़ारिये । आप की तहरीस के लिये एक मदनी बहार पेश की जाती है । एक इस्लामी भाई दीनी माहोल से वाबस्तगी से क़ब्ल निहायत ही बिगड़े हुए किरदार के मालिक थे, रात गए तक दोस्तों के झुरमट में खुश **गप्पियों** में मसरूफ़ रहते, न तो वालिदैन की इज़ज़त का पास था और न ही अपने कीमती वक़्त के ज़ियाअ (या'नी ज़ाएअ होने) का एहसास, इन की ज़िन्दगी के चारों तरफ़ ग़फ़्लतों का पहरा था । घर वाले इन की हरकतों की वजह से सख़्त परेशान, इन्हें सुधारने की तगो दौ में लगे रहते क्यूं कि नेक औलाद से मुआशरे में वालिदैन की भी नेक नामी होती है । एक रोज़ इन के भाई ने एक



आशिके रसूल से इन की मुलाक़ात करवाई, उन्होंने ने निहायत महबूबत भरे अन्दाज़ में दा'वते इस्लामी के तहत होने वाले हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ में शिर्कत की दा'वत पेश की और मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला लेने की रग़बत दिलाई नीज़ अहक़ामे शरीअत पर अमल की बरकतें और फ़ज़ीलतें बताईं। उन की भरपूर इन्फ़िरादी कोशिश ने दिल पर गहरा असर डाला और वोह इन्कार न कर सके। इन्होंने ने मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में दाख़िला ले लिया। **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** मद्रसतुल मदीना (बराए बालिग़ान) में मुझे दुरुस्त मख़ारिज से हुरूफ़ की अदाएगी के साथ कुरआने मजीद फुरक़ाने हमीद पढ़ने की सअ़ादत मिली और सुन्नते मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ** के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले आशिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से दीन से ऐसी महबूबत पैदा हो गई कि आज के बिगड़े हुए हाल़ात में जब कि चहार सू फ़ैशन परस्ती का दौर दौरा है, चेहरे पर दाढ़ी शरीफ़ और सर पर इमामा शरीफ़ का ताज सजाए न सिर्फ़ खुद सुन्नतों भरी ज़िन्दगी बसर करने की कोशिश कर रहे हैं बल्कि सुन्नतों के परचार के भी कोशां (या'नी कोशिश करने वाले) हैं, **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ** ता दमे तहरीर इन्हें ज़ैली मुशावरत के निगरान की हैसियत से दीनी कामों की ज़िम्मेदारी मिली हुई है।

*बुरी सोहबतों से कनारा कशी कर के अच्छों के पास आ के पा मदनी माहोल
तनज़ुल के गहरे गढ़े में थे उन की तरक्की का बाइस बना मदनी माहोल*

(वसाइले बख़्शाश, स. 604)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلَى مُحَمَّدٍ



दा'वते इस्लामी के जामिआत व मदारिस की ता'दाद

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस मदनी बहार में इन्फ़रादी कोशिश और **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान) की बरकतें नुमायां हैं कि जिन की वजह से एक औबाश नौ जवान राहे सुन्नत पर चल कर दूसरों को चलाने वाला बना । तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों से मेरी मदनी इल्तिजा है कि अपने अपने **मद्रसतुल मदीना** (बालिग़ान व बालिगात) में ज़रूर दाख़िला लें और कुरआने करीम न पढ़े हों तो पढ़ें और अगर तज्वीद के साथ पढ़े हुए हों तो अपने तन्ज़ीमी जिम्मेदार से तरकीब बना कर दूसरों को पढ़ाएं । **اللّٰهُمَّ** मेरी मा'लूमात के मुताबिक़ ता दमे तहरीर (14 रमज़ानुल मुबारक 1432 हि./ 15 अगस्त 2011 ई.) बराए हिफ़ज़ व नाज़िरा मदनी मुन्नो के तक्रीबन **766** और मदनी मुन्नियों के तक्रीबन **316** मदारिसुल मदीना चलाए जा रहे हैं जिन में बच्चों और बच्चियों की मिला कर कुल ता'दाद तक्रीबन **72000** है । नीज़ इस्लामी भाइयों के **मद्रसतुल मदीना** बालिग़ान (उमूमन वक़्त : बा'दे इशा दौरानिया : तक्रीबन 40 मिनट) की ता'दाद तक्रीबन **3316** है और इस्लामी बहनों के **मद्रसतुल मदीना** बालिगात (उमूमन वक़्त : सुब्ह 8:00 से ले कर अ़स् तक मुख़्तलिफ़ अवकात में, दौरानिया : 1 घन्टा 12 मिनट) की ता'दाद तक्रीबन **3938** है । नीज़ (10 रजबुल मुरज्जब 1432 हि. । 12-6-2011) इस्लामी भाइयों के दर्से निज़ामी के जामिआतुल मदीना की ता'दाद तक्रीबन **90** और इस्लामी बहनों के जामिआतुल मदीना की ता'दाद तक्रीबन **72** है, **त़लबा की ता'दाद तक्रीबन 6671** और **त़ालिबात की ता'दाद तक्रीबन 2841**





है।⁽¹⁾ इन तमाम जामिआतुल मदीना (ब्वॉयज़ एंड गर्लज़) और मदारिसुल मदीना (ब्वॉयज़ एंड गर्लज़) में मुफ्त ता'लीम दी जाती है और इन के अख़राजात मुख़य्यिर इस्लामी भाइयों के अतिथ्यात से पूरे किये जाते हैं। हर मुसल्मान को दुरुस्त कुरआने करीम पढ़ना और फ़र्ज़ दीनी उलूम से आशना (या'नी वाकिफ़) होना ज़रूरी है।

ता'लीमे कुरआने करीम के मुतअल्लिक़ दो अहम मदनी फूल

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की 1250 सफ़हात पर मुशतमिल किताब, “बहारे शरीअत जिल्द अब्वल” सफ़हा 545 ता 546 पर है : **﴿1﴾** एक आयत का हिफ़ज़ करना हर मुसल्मान मुकल्लफ़ (या'नी अक़िल व बालिग़) पर फ़र्ज़ ऐन है और पूरे कुरआने मजीद का हिफ़ज़ करना फ़र्ज़ किफ़ायया और **सूरए फ़ातिहा** और एक दूसरी छोटी सूरात या उस के मिस्ल, मसलन तीन छोटी आयतें या एक बड़ी आयत का हिफ़ज़, वाजिबे ऐन है। (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٢ ص ٣١٠) **﴿2﴾** ब क़दरे ज़रूरत मसाइले फ़िक्ह का जानना फ़र्ज़ ऐन है और हाजत से जाइद (मसाइल) सीखना हिफ़जे जमीअ कुरआन (या'नी हाफ़िजे कुरआन बनने) से अफ़ज़ल है। (رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ٢ ص ٣١٠)

येही है आरजू ता'लीमे कुरआं आम हो जाए तिलावत करना अपना काम सुब्हो शाम हो जाए

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ❀❀❀ صَلَّى اللَّهُ عَلَى مُحَمَّدٍ

1! اَلصَّلَاةُ لِلَّهِ الْكَرِيمِ! जून 2023 के मुताबिक़ आशिक़ाने रसूल की दीनी तहरीक दा'वते इस्लामी के मदारिसुल मदीना (ब्वॉयज़, गर्लज़) की ता'दाद कमो बेश 14290 है जिन में पढ़ने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 456773 है, इन मदारिस से हिफ़ज़ुल कुरआन मुकम्मल करने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 1,17,588 है, नाज़िरा कुरआन की तक्मील करने वाले बच्चे और बच्चियों की ता'दाद 4,76,321 है, जब कि हिफ़ज़ व नाज़िरा मुकम्मल करने वालों की मज्मूई ता'दाद 5,93,909 है। इसी तरह जामिआतुल मदीना (ब्वॉयज़, गर्लज़) की ता'दाद कमो बेश 1,350 है, इन में पढ़ने वाले त़लबा व त़ालिबात की ता'दाद 1,18,613 है, जब कि फ़ारिगुत्तहसील होने वाले त़लबा व त़ालिबात की ता'दाद 28,529 है।



अगले हफ़्ते का रिसाला

